Bihar Board Class 7 Sanskrit Notes Chapter 12 अरण्यम्

अरण्यम् Summary

[प्रस्तुत पाठ में पर्यावरण की शुद्धि के सबसे महत्त्वपूर्ण साधन वन का वर्णन है । वन जल, वायु, मिट्टी सबको शुद्ध करते हैं। अतः उनकी रक्षा आवश्यक है । उनमें अनेक पशु-पक्षी अपनी जीवन-चर्या का संचालन करते हैं। मानव की व्यापक उन्नति की दृष्टि से वनों का बहुत महत्त्व है । इसलिए वनों के प्रति छात्रों की अभिरुचि उत्पन्न करना इस पाठ का उद्देश्य है ।

वृक्षाणां समूहः अरण्यं वनं वा.....एव सहजरूपेण निवसन्ति।

शब्दार्थ-अरण्यम् – जंगल, वन । प्रकृतिसंभवाः – प्राकृतिक रूप से उत्पन्न । वन्याः = जंगली । प्राणिनः = जीव (बहुवचन) । निवसन्ति – रहते हैं । व्याघ्राः = बाघ (बहुवचन) । भल्लुकाः – भालू । वानराः – बन्दर । शृगानप्रभृतयः = सियार इत्यादि । पशवः – जानवर । सहजरूपेण .. स्वाभाविक रूप से । सरलार्थ-वृक्षों का समूह अरण्य या वन, होता है । वन में प्राकृतिक रूप से उत्पन्न वृक्ष होते हैं । वहाँ वन्यप्राणी रहते हैं । बाघ, सिंह, भालू. बन्दर, शृगाल आदि पश् वन में स्वाभाविक रूप से रहते हैं।

अरण्येषु विविधाः वनस्पतयः ..... उपस्कराणां निर्माण कर्वन्ति ।

शब्दार्थ- वनस्पतयः – पेड़-पौधे । काष्ठेभ्यः ॥ लकड़ियों से । उपस्कराणाम् = लकड़ी के सामानों का । सरलार्थ-वन में विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधे होते हैं। उनसे फल प्राप्त होते हैं । वनों से विभिन्न प्रकार के औषधि प्राप्त होते हैं । वन से प्राप्त अनेक प्रकार की लकड़ियों से लोग लकड़ियों के सामान बनाते हैं।

प्राणिनां प्राणरक्षायै वनम् ..... वृक्षाः परोपकारिणः सन्ति ।

शब्दार्थ-धारयामः = धारण करते हैं. ग्रहण करते हैं । त्यजामः । (हम) छोड़ते हैं । इत्थम् – इस प्रकार । मिलन्ति – मिलते हैं। मुञ्चन्ति = छोड़ते हैं। सरलार्थ-जीवों की प्राण रक्षा के लिए वन जरूरी है । हमलोग ऑक्सीजन नामक प्राणवायु को ग्रहण करते हैं और कार्बन डाईऑक्साइड नामक दूषित वायु छोड़ते हैं । वृक्ष दूषित वायु को ग्रहण करते हैं और शुद्ध हवा छोड़ते हैं । इस प्रकार वृक्ष परोपकारी हैं –

अधुना संसारे पर्यावरणप्रदूषणं ..... विना वयं क्षणमपि न जीवामः ।

शब्दार्थ-रुग्णाः = रोगी । नाशयितम = नष्ट करने के लिए। सततम – निरन्तर, हमेशा । वर्धमानाम् = बढ़ती हुई, बढ़ने वाली । उष्णताम – गमी को । सरलार्थ-आजकल संसार में पर्यावरण प्रदूषण निरन्तर बढ़ रहे हैं ! वाय प्रदूषण से लोग बीमार पड़ते हैं। जीवनोपयोगी वस्तुआ के बीच वाय का प्रथम स्थान है । वायु के बिना हम क्षण भी नहीं जीवित रह सकते हैं ।

वायुप्रदूषणं नाशयितुम् अरण्यम् ..... वन्यजीवाः संरक्षिताः तिष्ठन्ति ।

https://www.evidyarthi.in/

शब्दार्थ-वारयितुम् – रोकने के लिए । क्षमाः . समर्थ हैं। वर्षार्थम – वर्षा के लिए । आकर्षति = आकृष्ट करता है । भूक्षरणम् = मिट्टीका कटना, बह जाना । न्यूनतामुपयाति = (न्यूनताम् + उपयाति) कम होता है। संरक्षिताः – सुरक्षित । तिष्ठन्ति -‘ रहते हैं । सरलार्थ-वायु प्रदूषण नष्ट करने के लिए वन आवश्यक हैं। वृक्ष संसा में सतत् बढ़ने वाली गर्मी को रोकने में समर्थ हैं । इससे मिट्टी का कटना कम होता है । वन्य जीव संरक्षित रहते हैं।

इदानीं जनाः तात्कालिकलाभाय..... संरक्षणं संवर्धन च कर्त्तव्यम् ।

शब्दार्थ-इदानीम् = इस समय । छेदनम् = काटना । निरन्तरम् । लगातार । कर्त्तनेन = काटने से । महती = बहुत बड़ी । गहणन्ति – ग्रहण करते हैं, लेते हैं । न्यूनम् – कम । सञ्जाता – हुई। स्यात् – हो, रहे । तर्हि •तो, तब । भविष्यति = हो जाएगा । संवर्धनम् = बढ़ाना । संरक्षणम् = रक्षा । कर्तव्यम् – करना चाहिए । इयमेव + (इयम् + एव) यही (स्त्री०)। सरलार्थ-इस समय लोग तात्कालिक लाभ के लिए वृक्षों को काटते हैं। निरन्तर वृक्षों के कटने सेस विश्व की बड़ी हानि हो रही है। यही स्थिति रही तो सबों का जीवन प्रदूषण से कठिन हो जाएगा । अतः वृक्षों का संरक्षण और संवर्द्धन करना हमारा कर्तव्य है।

व्याकरणम् –

सन्धि-विच्छेदः

1. ओषधयश्च = ओषधयः + च
2. अत्यावश्यकम् = अति + आवश्यकम्
3. वायुञ्च = वायुम् + च
4. सजाता = सम् + जाता

प्रकृति-प्रत्यय-विभागः

सञ्जाता	=	√सम् + जन् + क्त + टाप्
स्थितिः	=	√स्था + क्तिन्
कर्त्तनम्	=	√कृत् + ल्युट्
कर्तव्यम्	=	√कृ + तव्य
वन्यः	=	√वन + यत्
रुग्णाः	=	√रुज् + क्त
वर्धमानम्	=	√वृध् + शानच्
छेदनम्	=	√छिद् + ल्युट्

https://www.evidyarthi.in/